पाठ 66

1. यहूदी नेता फसह के पर्व के दौरान यीशु को गिरफ्तार क्यों नहीं करना चाहते थे?

-क्योंकि उन्हें डर था कि अगर उन्होंने फसह के पर्व के दौरान यीशु को गिरफ्तार कर लिया, तो लोग हिंसा का जवाब देंगे।

2. क्या यहूदा जानता था कि वह पाप में पैदा हुआ था, और उसे अपने उद्धारकर्ता के रूप में यीशु की आवश्यकता थी?

-नहीं।

3. यीशु को धोखा देने के लिए यहूदा का नेतृत्व किसने किया?

-शैतान।

4. शैतान क्यों चाहता था कि यहूदा यीशु के साथ विश्वासघात करे?

-क्योंकि शैतान यीशु से नफरत करता है।

5. शैतान यीशु से नफरत क्यों करता है?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है।

-क्योंकि यीशु सच बोलते हैं।

6. शैतान क्यों चाहता था कि यहूदी नेता यीशु को मार डालें?

-शैतान चाहता था कि यहूदी नेता यीशु को मार डालें ताकि यीशु हमें न बचाए।

-शैतान चाहता था कि यहूदी नेता यीशु को मार डालें ताकि यीशु पाप और मृत्यु की शक्ति को नष्ट न करे।

-शैतान चाहता था कि यहूदी नेता यीशु को मार डालें ताकि यीशु शैतान की शक्ति को नष्ट न करे।

7. भविष्यवक्ताओं ने किससे कहा कि उद्धारकर्ता को धोखा देगा?

-करीबी दोस्त।

8. यीशु को कितना धोखा दिया गया था?

-चांदी के तीस टुकड़े।

9. यीशु को कैसे पता चला कि यहूदा उसके साथ विश्वासघात करेगा?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है और वह सब कुछ जानता है।

-ऐसा कुछ भी नहीं है जो यीशु नहीं जानता।

10. रोटी कैसे यीशु के शरीर की निशानी थी?

-जिस तरह रोटी तोड़ी गई, उसी तरह यीशु का शरीर भी दुष्ट लोगों द्वारा तोड़ा जाएगा।

11. दाखरस किस प्रकार यीशु के लहू की निशानी थी?

-जैसे शराब पीने के लिए उँडेली जाती थी, वैसे ही यीशु का लहू भी बहाया जाता था।

12. यीशु ने किसके लिए कहा कि उसका लहू बहाया जाएगा?

-यीशु ने कहा कि उनका लहू बहुत से लोगों के लिए बहाया जाएगा।

-यीशु और उनके शिष्यों के यरूशलेम छोड़ने के बाद, वे जैतून के पहाड़ पर गतसमनी नामक एक बगीचे में गए।

आइए पढ़ें मरकुस 14:32-36

32-वे गतसमनी नामक स्थान पर गए, और यीशु ने अपने चेलों से कहा, “यहाँ बैठ जब मैं प्रार्थना करूँ।”

33-और वह पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया, और वह बहुत व्याकुल और व्याकुल होने लगा।

34-"मेरी आत्मा मृत्यु के बिंदु तक दुःख से अभिभूत है," उसने उनसे कहा। "यहाँ रहो और चौकस रहो।"

35-थोड़ा आगे जाकर वह भूमि पर गिर पड़ा और प्रार्थना की कि यदि हो सके तो वह घड़ी उसके पास से निकल जाए।

36-"अब्बा, पिता," उन्होंने कहा, "आपके लिए सब कुछ संभव है। यह प्याला मुझसे ले लो। तौभी वह नहीं जो मैं करूंगा, परन्तु जो तुम करोगे।”

-गतसमनी के बगीचे में, यीशु ने प्रार्थना करना शुरू किया, क्योंकि वह बहुत परेशान था।

-यीशु को गहरी परेशानी क्यों हुई?

-क्योंकि यीशु जानता था कि उसे बहुत दुख होगा।

-क्योंकि यीशु जानता था कि उसके सामने जो दुख था वह उससे भी ज्यादा भयानक था जितना किसी ने कभी नहीं झेला।

-यद्यपि यीशु पूर्ण रूप से परमेश्वर थे, फिर भी वे पूर्ण रूप से मनुष्य भी थे।

-यीशु के लिए उस भयानक पीड़ा का सामना करना बहुत कठिन होगा जो उसके सामने थी।

आइए पढ़ें मरकुस 14:37-42

37-तब यीशु अपने चेलों के पास लौटा और उन्हें सोता हुआ पाया। "शमौन," उसने पतरस से कहा, "क्या तुम सो रहे हो? क्या तुम एक घंटे तक निगरानी नहीं रख सकते थे?

38-जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर दुर्बल है।”

39-एक बार फिर वह चला गया और वही प्रार्थना की।

40-जब वह लौटकर आया, तो उन्हें फिर सोता हुआ पाया, क्योंकि उन की आंखें भारी थीं। वे नहीं जानते थे कि उससे क्या कहें।

41-तीसरी बार लौटकर [यीशु] ने उनसे कहा, “क्या तुम अब तक सो रहे हो और आराम कर रहे हो? पर्याप्त! घंटा आ गया है। देखो, मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया गया है।

42-उठो! अब चलें! यहाँ मेरा विश्वासघाती आता है! ”

-जैसे ही यीशु ने गतसमनी के बगीचे में प्रार्थना करना समाप्त किया, तलवारों और लाठियों के साथ लोगों की भीड़ आ गई।

आइए पढ़ें मरकुस 14:43-46

43-जैसे वह बोल ही रहा था, कि बारह में से एक यहूदा प्रकट हुआ। उसके साथ तलवारों और लाठियों से लैस एक भीड़ थी, जिसे महायाजकों, कानून के शिक्षकों और पुरनियों की ओर से भेजा गया था।

44-अब पकड़वाने वाले ने उनके साथ एक संकेत दिया था: "मैं जिसे चूमता हूं वह आदमी है; उसे गिरफ्तार करो और पहरे में ले जाओ।"

45-तुरंत यीशु के पास जाकर यहूदा ने कहा, "रब्बी!" और उसे चूमा।

46-पुरुषों ने यीशु को पकड़ लिया और उसे गिरफ्तार कर लिया।

-तलवारों और लाठियों से लैस आदमियों की भीड़ का नेतृत्व कौन कर रहा था?

-यहूदा।

-यहूदा और मनुष्यों की भीड़ क्यों आई थी?

-यीशु को गिरफ्तार करने के लिए।

-यीशु को गिरफ्तार करने के लिए यहूदा का नेतृत्व कौन कर रहा था?

-शैतान।

-इन दिनों, शैतान किसके नेतृत्व में है?

-सभी लोग जो मानते हैं कि उन्होंने परमेश्वर के खिलाफ पाप नहीं किया है, शैतान के नेतृत्व में हैं।

-सभी लोग जो मानते हैं कि भगवान उन्हें उनके पाप के लिए दंडित नहीं करेंगे, वे शैतान के नेतृत्व में हैं।

-सभी लोग जो मानते हैं कि भगवान उन्हें उनके अच्छे कामों के कारण स्वीकार करेंगे, उनका नेतृत्व शैतान करता है।

-सभी लोग जो मानते हैं कि वे खुद को बचा सकते हैं, शैतान के नेतृत्व में हैं।

-सभी लोग जो परमेश्वर के वचन को सुनने से इनकार करते हैं, शैतान के नेतृत्व में हैं।

-सभी लोग जो यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में मानने से इनकार करते हैं, उनका नेतृत्व शैतान द्वारा किया जाता है।

-यहूदा ने यीशु को कैसे धोखा दिया?

-चुम्बन के साथ।

-जैसे ही यहूदा ने यीशु को चूमा, यहूदा के लोगों ने यीशु को पकड़ लिया और उसे गिरफ्तार कर लिया।

आइए पढ़ें मरकुस 14:47-49

47-तब उनके पास खड़े लोगों में से एक ने अपनी तलवार खींची और महायाजक के दास का कान काट दिया।

48-"क्या मैं विद्रोह का नेतृत्व कर रहा हूं," यीशु ने कहा, "कि तुम मुझे पकड़ने के लिए तलवारें और लाठियां लेकर आए हो?

49-मैं प्रति दिन मन्दिर के आंगनों में उपदेश करते हुए तुम्हारे संग रहा करता था, और तुम ने मुझे गिरफ्तार नहीं किया। परन्तु पवित्रशास्त्र अवश्य पूरा होना चाहिए।”

-यीशु का क्या मतलब था जब उन्होंने कहा कि शास्त्रों को पूरा किया जाना चाहिए?

-यीशु का मतलब था कि वह सब कुछ जो परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यवक्ताओं के माध्यम से उद्धारकर्ता के बारे में कहा था।

आइए पढ़ें मरकुस 14:50

50-तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए।

-यीशु के सभी चेले क्यों भाग गए?

-चेले डर गए और समझ नहीं पा रहे थे कि यीशु को क्यों गिरफ्तार किया जा रहा है।

-शिष्यों को क्या समझ नहीं आया?

-चेलों को समझ में नहीं आया कि अगर यीशु को गिरफ्तार कर लिया गया और उसे मार दिया गया तो वह उद्धारकर्ता कैसे बन पाएगा।

-चेलों को समझ में नहीं आया कि अगर यीशु मर गया तो यीशु उन्हें कैसे बचा पाएगा।

-यीशु को गिरफ्तार करने वाले लोग उसे कहाँ ले गए?

आइए पढ़ें मरकुस 14:53-54

53-वे यीशु को महायाजक के पास ले गए, और सब महायाजक, पुरनिए और व्यवस्या के शिक्षक इकट्ठे हो गए।

54-पतरस उसके पीछे पीछे दूर ही महायाजक के आंगन में गया। वहाँ वह पहरेदारों के साथ बैठ गया और आग में खुद को गर्म किया।

-यीशु को गिरफ्तार करने वाले लोग उसे महायाजक के पास ले गए।

-पतरस ने कुछ ही दूरी पर पीछा किया, लेकिन उसे यह भी डर था कि उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा और उसे मार दिया जाएगा।

-जब वे लोग यीशु को महायाजक के पास ले आए, तो सभी महायाजक और यहूदी नेता यीशु का न्याय करने के लिए इकट्ठे हुए।

आइए पढ़ें मरकुस 14:55

55-महायाजक और सारी महासभा यीशु के विरुद्ध साक्ष्य ढूंढ़ रहे थे, कि उसे मार डालें, परन्तु कोई न मिला।

-यहूदी नेताओं को यीशु के साथ कुछ भी गलत क्यों नहीं मिला?

-क्योंकि यीशु ने कुछ भी गलत नहीं किया था।

-क्योंकि यीशु ने पाप नहीं किया था।

-अन्य लोगों ने यीशु के खिलाफ गवाही दी, लेकिन उनकी गवाही भी झूठ थी।

आइए पढ़ें मरकुस 14:56-59

56-कई लोगों ने उनके खिलाफ झूठी गवाही दी, लेकिन उनके बयान नहीं माने.

57-तब कितनों ने उठकर उसके विरुद्ध यह झूठी गवाही दी:

58-"हमने उसे यह कहते सुना, 'मैं इस मानव निर्मित मंदिर को नष्ट कर दूंगा और तीन दिनों में एक और बनाऊंगा, जो मनुष्य द्वारा नहीं बनाया गया है।'"

59-फिर भी उनकी गवाही नहीं मानी।

-हालांकि कई लोगों ने यीशु के खिलाफ झूठ की गवाही दी, यहूदी नेताओं को अभी भी यीशु के साथ कुछ भी गलत नहीं मिला।

-जैसे परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कहा था, कई झूठे गवाह उद्धारकर्ता के बारे में झूठ की गवाही देंगे।

-तब महायाजक खड़ा हुआ और यीशु से बोला।

आइए पढ़ें मरकुस 14:60-62

60-तब महायाजक उनके सामने खड़ा हुआ और यीशु से पूछा, “क्या तू उत्तर नहीं देगा? यह क्या गवाही है कि ये लोग तुम्हारे विरुद्ध ला रहे हैं?”

61-लेकिन ईसा चुप रहे और उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। फिर महायाजक ने उस से पूछा, क्या तू उस धन्य का पुत्र मसीह है?

62- "मैं हूँ," यीशु ने कहा। "और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिने बैठे और स्वर्ग के बादलों पर आते देखोगे।"

-जब लोग यीशु के खिलाफ झूठ की गवाही दे रहे थे, तो वह चुप रहा और उसने कोई जवाब नहीं दिया।

-यीशु ने जवाब क्यों नहीं दिया?

-यीशु जानता था कि परमेश्वर पिता उसका मार्गदर्शन करेगा।

-यीशु जानता था कि उसके साथ होने वाली हर चीज को पिता परमेश्वर नियंत्रित कर रहा है।

-जब महायाजक ने यीशु से बात की और उससे पूछा कि क्या वह परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो यीशु ने क्या उत्तर दिया?

-यीशु ने उत्तर दिया और कहा, "मैं हूं।"

-यीशु ने यह भी कहा, "और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिने बैठे और स्वर्ग के बादलों पर आते देखोगे।"

-जब यीशु पहली बार पृथ्वी पर आया, तो वह लोगों को बचाने के लिए उद्धारकर्ता परमेश्वर के रूप में आया।

-जब यीशु धरती पर लौटेगा, तो हर कोई उसे पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा देखेगा।

-जब यीशु धरती पर लौटेंगे, तो सभी देखेंगे कि यीशु ही परमेश्वर हैं।

-यीशु के वचन सुनकर महायाजक ने क्या किया?

आइए पढ़ें मरकुस 14:63-64

63-महायाजक ने अपने कपड़े फाड़े। "हमें और गवाहों की आवश्यकता क्यों है?" उसने पूछा।

64-“तुमने निन्दा सुनी है। तुम क्या सोचते हो?" सबने उसे मृत्यु के योग्य बताकर उसकी निंदा की।

-महायाजक ने अपने कपड़े क्यों फाड़े?

-जब यहूदी बहुत क्रोधित या परेशान होते थे, तो उनके कपड़े फाड़ने का उनका रिवाज था।

-महायाजक ने अपने कपड़े फाड़ दिए क्योंकि वह यीशु से बहुत नाराज था।

-महायाजक यीशु से नाराज़ क्यों थे?

-क्योंकि यीशु ने कहा था कि वह ईश्वर है।

-महायाजक ने क्यों कहा कि यीशु को मार डाला जाना चाहिए?

-महायाजक ने कहा कि यीशु ने भगवान को श्राप दिया था।

-क्या यीशु ने भगवान को श्राप दिया था?

-नहीं।

-यीशु केवल यही कह रहा था कि वह ईश्वर है।

आइए पढ़ें मरकुस 14:65

65-तब कोई उस पर थूकने लगे; उन्होंने उसकी आंखों पर पट्टी बांधी, और मुट्ठियों से मारा, और कहा, "भविष्यद्वाणी कर!" और पहरेदारों ने उसे पकड़कर पीटा।

-जैसे परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कहा था, उद्धारकर्ता को पीटा जाएगा और उस पर थूका जाएगा।

-महायाजक और यहूदी नेताओं ने तब यीशु को मरने की निंदा की।